**SHODH SAMAGAM**

**ISSN : 2581-6918 (Online), 2582-1792 (PRINT)**

# स्वामी विवेकानंद के दर्शन में दार्शनिक एवं सामाजिक विचार

**मनोहर लाल स्वामी,** (Ph.D.) राजनीतिशास्त्र (विद्या संबल योजना),
श्री गोविन्द गुरू राजकीय महाविद्यालय, बॉसवाड़ा, राजस्थान, भारत

**ORIGINAL ARTICLE**

**Author**
**मनोहर लाल स्वामी** (Ph.D.)

shodhsamagam1@gmail.com

Received on : 15/05/2023
Revised on : -----
Accepted on : 25/05/2023
Plagiarism : 00% on 15/05/2023

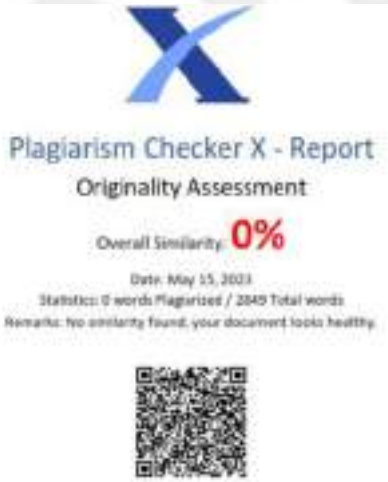


## शोध सार

*स्वामी विवेकानंद के दार्शनिक और सामाजिक विचारों का आधार मनुष्य और उसकी अमर आत्मा मानव धर्म और मानव सेवा, राष्ट्र के उत्थान की आवश्यकता, भारत और विश्व एक दूसरे के पूरक, आध्यात्म और विज्ञान तथा पूर्व और पश्चिम में समन्वय जैसे बिन्दु है। वर्तमान में धर्म और राष्ट्रवाद के अन्तसम्बंन्धों को संदेह की दृष्टि से देखा जाता है जबकि भारतीय संदर्भ में धर्म जीवन का मूल आधार है। प्राचीन काल से भारत में धर्म को मानवतावादी सार्वभौमिक रूप में प्रकट किया गया। भारतीय राष्ट्रवादियों पर वेदात हिन्दू धर्म का स्पष्ट प्रभाव था। स्वामी विवेकानन्द ने अपने चिंतन में कई पूर्वकालीन अवधारणाओं को समकालीन संदर्भ में परिभाषित किया और एक नई सामाजिक राजनीतिक समझ को जन्म दिया। स्वामी विवेकानंद ने वेदांत दर्शन को इस तरह से विकसित किया जिससे समस्त संघर्षों को दूर किया जा सके, और इससे मानव जाति का बहुमुखी विकास हो सके। उन्होंने भारत की विशिष्टता को धर्म के रूप में प्रतिष्ठित किया धर्म की इस विशद् व्याख्या में मानवतावादी, सार्वभौमिक स्वरूप, वैज्ञानिकता और आचरण के नियमों को प्रस्तुत किया। उन्होंने विश्व के सम्मुख भारतीय संस्कृति और सभ्यता की श्रेष्ठता को प्रतिपादित किया। उनके मन में मातृ भूमि के प्रति अगाध प्रेम था। उन्होंने पश्चिम के विपरीत राष्ट्रवाद का आधार, धर्म को बनाते हुए आध्यात्मिक राष्ट्रवाद की अवधारणा विकसित की। राष्ट्रवाद के उन्ननय में, अभयम, आत्मबल और आत्मविश्वास को अत्यधिक महत्व दिया। उन्होंने अस्पृष्यता, शोषण स्त्रियों की दयनीय दशा, शिक्षा के अभाव आदि को सामाजिक विषमता व गिरती स्थिति के लिए उत्तरदायी माना तथा अवसरों की समानता को सिद्धांत को स्वीकार किया। स्वामी विवेकानंद ने युवाओं को कर्मयोग की महत्ता। समझाई दरिद्र नारायण की सेवा को राष्ट्रवाद से*

*जोड़ने का उनका विचार गांधी चिंतन में स्पष्ट दिखाई देता है। उन्होंने संक्रमण राष्ट्रवाद से दूर रहकर राष्ट्रीय एकीकरण पर बल दिया। वे भारत के एक ऐसे राष्ट्रवादी है जो धर्म के माध्यम से भारत में राष्ट्रवाद को पुनर्जागत करना चाहते थे। स्वामी विवेकानंद परम्परागत अर्थों में दार्शनिक या समाज सुधारक नहीं थे। वास्तव में वे धार्मिक व्यक्ति थे जिन्होंने धर्म की व्याख्या इस तरह से की, कि आपसी संघर्ष साम्प्रदायिकता, सामाजिक दुरावस्था व राष्ट्रीय परतन्त्रता का समाधान अपने आप ही हो जाए।*

## मुख्य शब्द

*सामाजिक, दार्शनिक, समाज, संस्कृति, सभ्यता.*

## प्रस्तावना

मूलतः आध्यात्मिक विचारक होने के कारण स्वामी विवेकानन्द के राजनीतिक चिन्तन आधार धर्म रहा। इसी आधार पर स्वामी विवेकानन्द ने राष्ट्र की स्वतन्त्रता एवं आत्मसम्मान को महत्व देते हुए राष्ट्र के आध्यात्मिक पहलू को स्थापित किया जो उन्हें पश्चिमी राष्ट्रवादी चिंतन अलग कर देता है, क्योंकि पश्चिम में राष्ट्रवाद का विकास महत्वपूर्ण सांस्कृतिक तत्व धर्म से होकर हुआ है। स्वामी विवेकानन्द से पूर्व विभिन्न कालों में धर्म के स्वरूप व व्यवस्था में रूढ़ियां गई थी, जिससे न केवल व्यक्ति की स्थिति बदतर हुई वरन् समाज व राष्ट्र भी लम्बे समय तक अज्ञान रूपी अंधकार में रहें, ऐसी स्थिति में विवेकानन्द ने धर्म के व्यवहारिक रूप को पहचानने की पर बल दिया। धर्म में व्यक्तिगत एवं सामाजिक दोनों पहलुओं को महत्व दिया और कर्मकाण्ड से अलग राजनीतिक एवं सामाजिक चिंतन में उसकी विशेष भूमिका पर बल दिया। वेंदात के आधार पर स्वामी विवेकानंद ने समानता, कर्तव्य, अधिकार एवं न्याय इत्यादि राजनीतिक अवधारणाओं की व्याख्या की। स्वामी विवेकान्द ने धर्म के माध्यम से राष्ट्र को पुनः जागृत करने का प्रयास किया। इस हेतु राष्ट्रवाद के निर्भीक, संगठित एवं स्वावलम्बी मूल्यों को स्थापित किया, स्वामी ने धर्म को व्यक्ति के विकास का माध्यम न मानकर उसके सामाजिक स्वरूप को महत्व दिया।

## उद्देश्य

प्रस्तुत शोध पत्र के निम्न उद्देश्य हैः

1. स्वामी विवेकानन्द के दार्शनिक एवं सामाजिक विचारों के प्रभाव की प्रासंगिकता का अध्ययन करना।
2. स्वामी विवेकानन्द के जीवन दर्शन का अध्ययन करना।
3. स्वामी विवेकानन्द के दार्शनिक विचारों का अध्ययन करना।
4. स्वामी विवेकानन्द के सामाजिक विचारों का अध्ययन करना।
5. स्वामी विवेकानन्द के दार्शनिक व सामाजिक विचारों का विश्लेषण करना।

## शोध विधि एवं आंकड़ों का संग्रहण

प्रस्तुत शोध पत्र से के लिए तथ्यों एवं आंकडों को प्राप्त करने के लिए अनेक पुस्तकों, पत्र–पत्रिकाओं के लेखो, समाचार पत्रों, वेबसाइट आदि के माध्यम से द्वितीयक स्त्रोत सामग्री प्राप्त कर विश्लेषण किया गया है।

## स्वामी विवेकानन्द का जीवन परिचय

स्वामी विवेकानंद का पूर्व नाम नरेन्द्रनाथ दत्त था, इनका जन्म कलकत्ता में 12 जनवरी 1865 में हुआ था। इनके पिता का नाम श्री विश्वनाथ दत्त था और इनकी माता थी श्रीमती भुवनेश्वरी देवी। इनके पिता वकालत करते थे, आमदनी अच्छी थी, अवकाश के समय अपने पुत्र नरेन्द्र को सदाचार की बातें बताते– जब तक हम सत्य तथा धर्म का पालन करते हैं, तब तक किसी से डरने की जरूरत नही। धमकी के आगे कभी नहीं झुकना, आत्मगौरव नहीं छोड़ना, स्वजाति के अभिमान के कारण अन्य जातियों से द्वेष नहीं करना, मानव कल्याण के लिए देशभक्ति आवश्यक है। विदेशी देश को दास बना सकते, परन्तु सात्विक प्राचीन संस्कृति का अपहरण नहीं कर सकते। नरेन्द्र को अपने

पिता से बचपन में जो सीख मिली थी, उसका इन्होंने जीवन पर्यन्त पालन किया। इसी प्रकार नरेन्द्र की माता उन्हें बचपन में रामायण और महाभारत की कहानियां सुनाया करती, श्री नरेन्द्र को बिना कहानी सुने नींद नहीं आती थी। इन कहानियों का नरेन्द्र के चारित्रिक विकास पर अच्छा प्रभाव पड़ा, ये मानव मात्र के प्रति सद्भावना रखते थे। धर्म और जाति के पर भेदभाव न करना नरेन्द्र ने बचपन में ही सीख लिया था। बचपन में नरेन्द्र निडर और साहसी थे। उन्हें व्यायाम का भी शौक था। वे संगीत में रूचि रखते थे और अच्छा गाते भी थे।

## विद्यार्थी जीवन (Student Life)

उनके पिता ने अपने पुत्र नरेन्द्र को संगीत की शास्त्रीय रीति से शिक्षा देने के लिए एक शिक्षक नियुक्त कर दिया था। नरेन्द्र के पिता बड़े उदार थे, वे दूसरों की सहायता यथासंभव करते, उन्हें यह चिन्ता नहीं कि उनके न रहने पर परिवार का क्या होगा और हुआ भी यही जब नरेन्द्र के पिता की मृत्यु हुई तब परिवार को गरीबी के कारण अनेक प्रकार के दुख उठाने पड़े। विद्यार्थी जीवन में नरेन्द्र ब्रह्म समाज का अनुयायी बन गया था। यह उल्लेखनीय है कि ब्रह्म की स्थापना राजा राम मोहन राय ने सन् 1828 में की थी। इसकी मान्यता थी कि विश्व का निर्माता और संरक्षक अनादि–अनन्त ईश्वर है। ब्रह्म समाज आत्मा की अमरता उसके चेतन अस्तित्व पर बल देता है। इस समाज में सभी धर्मों को मानने वाले सम्मिलित हो सकते थे। यह मानव की समानता और एकता पर बल देता है, साथ ही मानव सेवा को ही माधव सेवा मानता है। नरेन्द्र जी बाद में स्वामी विवेकानंद बने समाज की आधारित शिक्षाओं को अपने जीवन और शिक्षा में अपनाया। नरेन्द्र ने एम. ए. की परीक्षा दे दी, तब इनके विवाह की चर्चा चली, लेकिन इन्होंने इन्कार कर दिया यह जानकर कि नरेन्द्र की रूचि धर्म और आध्यात्म में है, तब इनसे कहा गया कि यदि तुम्हारे मन में धर्म के प्रति सच्ची जिज्ञासा है तो ब्रह्म समाज में क्यों जाता है? तुझे तो दक्षिणेश्वर के श्री राम कृष्ण के पास जाना चाहिए। यही बात नरेन्द्र के शिक्षक हेस्टी ने भी कही। एक दिन उन्होंने कहा था कि अंग्रेजी के कवि वर्डस्वर्थ प्रकृति के सौन्दर्य को देखकर इतने मग्न हो जाते थे कि उन्होंने भाव समाधि के बारे में और अधिक जानना चाहा, तब उन्होंने कहा कि चित्त की पवित्रता और किसी विषय में मन की एकाग्रता होने से भाव पवित्रता और किसी विषय में मन की एकाग्रता होने से भाव समाधि की अवस्था प्राप्त हो सकती है। लेकिन ऐसे लोग बहुत कम हैं। मेरी जानकारी में तो केवल दक्षिणेश्वर के श्री राम कृष्ण ही ऐसे हैं जिन्हें सहज की भाव समाधि लग जाती है।

## साहित्य समीक्षा

स्वामी विवेकानंद के द्वारा रचित साहित्य का अध्ययन करना क्यों आवश्यक है, और इसके अध्ययन से हमें क्या लाभ हो सकता है, इसका ज्ञान हमें महायोगी श्री अरविंद, गुरुदेव श्री रविन्द्रनाथ ठाकुर और पंडित जवाहरलाल नेहरू के कथनों से होता है।

श्री अरविंद का कथन है "हम कहते हैं देखो! मातृभूमि की जागृत आत्मा में विवेकानंद आज भी जीवित है। भारतमाता की संतानों के हृदय में विवेकानंद आज भी अधिष्ठित है।" गुरुदेव श्री रविन्द्रनाथ ठाकुर के अनुसार– यदि आप भारत को समझना चाहते हैं तो विवेकानंद का अध्ययन कीजिये। उनमें सकारात्मक है, नकारात्मक कुछ भी नहीं है।

भारत के उत्थान और विकास में स्वामी विवेकानंद के योगदान का आंकलन करते हुए पंडित जवाहरलाल नेहरू ने लिखा है– यद्यपि विवेकानंद अतीत भारत की नींव पर दृढ और परम्परा के प्रति गौरवान्वित रहे हैं तो भी जीवन की समस्याओं के प्रति उनकी विचारधारा आधुनिक थी। अवसादग्रस्त, हातोत्साह हिन्दू मन के लिए वे एक संजीवनी शक्ति के रूप में आए थे और उसमें उन्होंने आत्मविश्वास तथा अतीत पर श्रद्धा का मान भी पैदा किया। इस प्रकार स्वामी विवेकानंद का जीवन और साहित्य भारतीय संस्कृति, धर्म, दर्शन, समाज और शिक्षा के उन्नयन में कितना सहायक हुआ और आज भी हो रहा है।

## दार्शनिक विचार

दार्शनिक विचार स्वामी विवेकानंद के दार्शनिक विचार वेद उपनिषद और गीता जैसे ग्रंथों पर आधारित है।

भारतीय वेदान्त दर्शन की मूल स्थापनाओं को स्वामी जी ने व्यावहारिक जीवन में स्थान दिया और अपने अनुयायिओं को अपने जीवन और व्यवहार से इनकी शिक्षा दी। स्वामी जी के दार्शनिक विचारों का मूलाधार वेदान्त दर्शन है। अतः इसका संक्षिप्त परिचय अपेक्षित है।

25 मार्च, 1896 को हारवर्ड विश्वविद्यालय (संयुक्त राज्य अमेरिका) की स्नातक दर्शन परिषद् में स्वामी जी ने 'वेदान्त दर्शन' पर एक भाषण दिया था। इस भाषण में उन्होंने वेदान्त दर्शन और महत्व पर पर्याप्त प्रकाश डाला है। ऐसा करते समय स्वामी जी ने बताया, व्यावहारिक आधुनिक भारतीयों के अनुसार व्यास–सूत्र ही रूप से वेदांत ही हिन्दुओं के धार्मिक ग्रंथ है। सभी वेदान्ती तीन में एकमत है। ये सभी ईश्वर को वेदान्त दर्शन का आधार माना जाता है। वेदों के रूप को तथा सृष्टिचक्र को मानते हैं ...।

आगे चलकर स्वामी जी ने वेदान्त – दर्शन के जीवन और व्यावहारिक पक्ष को प्रस्तुत करते हुए कहा –निम्न से निम्न कीट में तथा उच्च से उच्च मनुष्य में एक ही आध्यात्मिक तत्त्व विद्यमान है। कीट निम्न कोटि का इसलिए है कि उसके देवत्व पर मायाजनित अध्यास अधिक रहता है। जिस पदार्थ में इस तरह का अध्यास सबसे कम रहता है, वह सबसे ऊँची कोटि का होता है। सभी वस्तुओं के पीछे उसी देवत्व का अस्तित्व है, और इसी से नैतिकता का आधार प्रस्तुत होता है। दूसरों को कष्ट नहीं देना चाहिए। प्रत्येक व्यक्ति को अभिन्न समझकर उनके साथ प्रेम करना चाहिए, क्योंकि समस्त विषय मौलिक स्तर पर एक है। दूसरे को कष्ट देना अपने आपको कष्ट देना है। दूसरे के साथ प्रेम करना अपने आपसे प्रेम करना है इसी से अद्वैत नैतिकता का वह सिद्धान्त उद्भूत होता है, जिसका समाहार एक आत्मोत्सर्ग शब्द में किया गया है। अद्वैतवासियों के अनुसार जीवात्मा ही दुःखों का कारण है। व्यक्ति सीमित जीवात्मा के कारण अपने को अन्य वस्तुओं से भिन्न समझता है, अतः यही घृणा ईर्ष्या, दुःख संघर्ष आदि अनिष्टों का कारण है। इसके परिहार से सभी संघर्ष, सभी दुःख समाप्त हो जाते हैं। अतः इसका परिहार आवश्यक है।

विश्वधर्म का आदर्श स्वामी विवेकानंद के दार्शनिक विचार और विश्वधर्म सम्बन्धी उनका आदर्श अत्यधिक महत्त्वपूर्ण स्थान रखता है। स्वामी जी जिस विश्वधर्म का प्रचार–प्रसार करना चाहते थे। उसमें सब प्रकार की मानसिक अवस्था वालों का ध्यान रखा गया। यह विश्वधर्म रूप से बल दिया जायेगा। स्वामी जी का कथन है, सबके लिए समान अत्यन्त निकटतम हैं। भक्ति योग, ज्ञान और कर्म के इस प्रकार का समन्वय विश्व धर्म का आदर्श होगा। भगवान की इच्छा से यदि सब लोगों के मन में इस ज्ञान योग, भक्ति और कर्म का प्रत्येक भाव ही पूर्ण मात्रा में और साथ ही समभाव से विद्यमान रहे, तो मेरे मत से मानव का सर्वश्रेष्ठ आदर्श यही होगा। जिसके चरित्र में इन भावों में से एक या दो प्रस्फुटित हुए है, मैं उनको एकपक्षीय कहता हूँ और सारा संसार ऐसे ही लोगो से भरा पड़ा हैं। इस तरह चारो ओर समभाव से विकास लाभ करना ही 'मेरे' कहे हुए धर्म का आदर्श और भारतवर्ष में हम जिसको योग कहते हैं, उसी के द्वारा इस आदर्श धर्म को प्राप्त किया जा सकता है। कर्मी के लिए यह मनुष्य जाति का योग है, योगी के लिए जीवात्मा और परमात्मा का योग, भक्त के लिए योग शब्द से यही अर्थ निकलता है। यह एक संस्कृत शब्द है और चार प्रकार के इस योग के अपने साथ प्रेममय भगवान् का योग और ज्ञानी के लिए बहुत है, बीच एकत्वानुभूतिरूप योग है।

योग के संस्कृत में भिन्न–भिन्न नाम है जो इस प्रकार की योग–साधना करना चाहते हैं वे ही योगी है। जो कर्म के माध्यम से इस योग का साधन करते हैं, उन्हें कर्मयोगी कहते हैं। जो भगवान् के भीतर इसका साधन करते हैं, उन्हें भक्तियोगी कहते हैं। जो रहस्यवाद के द्वारा इस योग का न करते हैं, उन्हें राजयोगी कहते हैं और जो ज्ञान–विचार के बीच इस योग का साधन करते उन्हें ज्ञानयोगी कहते है। अतएव योगी कहने से इन सभी का अर्थ निकलता है।

इस प्रकार स्वामी विवेकानंद के दार्शनिक विचार अद्वैत वेदात पर होते हुए कर्म, भक्ति ज्ञान में समन्वय योग द्वारा करके जीवन को सर्वागपूर्ण बनाने में सहायक होते हैं।

## सामाजिक विचार

स्वामी जी ने कर्म पर ज्ञान और भक्ति के समाज पर बल दिया है। अतः उनके सामाजिक विचारों में ऐसे कार्यों

की प्रधानता है जो समाज में सबको सुखी बनाना चाहते हैं, जो सामाजिक बुराइयों को नष्ट करना चाहते हैं और सबके प्रति समान रूप से प्रेमभाव रखते हैं। स्वामी विवेकानंद सामाजिक समता पर बल देते थे। उनका विचार कि समाज में किसी प्रकार का भेदभाव न हो ऊँच–नीच, छुआछूत आदि का स्वामी जी ने सदा विरोध किया। वे चाहते थे कि शिक्षा द्वारा समाज में पिछड़े लोगों का उत्थान किया जाए, लेकिन यह तभी संभव है जबकि प्रत्येक भारतवासी में निम्नलिखित बातें होः

- सदाचार की शक्ति में विश्वास।
- ईर्ष्या और संदेह का परित्याग।
- जो सत्कर्म करना चाहते हैं या कर रहे हैं, उनकी सहायता करना।
- जब किसी समाज के सदस्य सदाचार का पालन करते हैं, तब एक विशेष प्रकार की सामाजिक शक्ति उत्पन्न होती है और यह सामाजिक एकता को मजबूत बनाती है। दूसरी ओर ईर्ष्या और संदेह सामाजिक दोष है। इन दोषों को हमें छोड़ना होगा।

स्वामी जी का कथन है– क्या कारण है कि हिन्दू राष्ट्र अपनी अद्भुत बुद्धि एवं अन्यान्य गुणों के रहते हुए भी टुकड़े–टुकड़े हो गया? मैं इसका उत्तर दूंगा ईर्ष्या कभी भी कोई जाति एक–दूसरे से क्षुद्र भाव से ईर्ष्या करने वाली, या एक–दूसरे के सुयश से ऐसी डाह करने वाली न होगी, जैसी कि यह अमानी हिन्दू जाति भारत में तीन मनुष्य एक साथ मिलकर पांच मिनट के लिए भी कोई काम नहीं कर सकते।

स्वामी विवेकानंद चाहते थे कि जो लोग अच्छे कार्य कर रहे हैं उनकी सहायता की जाय। लेकिन इसी के साथ हमें यह भी ध्यान रखना चाहिए कि स्वामी विवेकानंद के अनुसार, सुधार का सम्पूर्णतः तोड़फोड़ कर देना नहीं है।

इसी संदर्भ में स्वामी जी का यह कथन अत्यन्त महत्वपूर्ण है तुम्हें साफ ताना चाहता हूँ कि मैं न तो जाति तोड़ने वाला हूँ और न समाज सुधारक हूँ। प्रत्यक्ष रूप से तो मुझे तुम्हारी जातियों या तुम्हारे सामाजिक सुधारों से कोई मतलब नहीं। जो जाति तुम्हें पसन्द हो उसमें रहो, पर उनके कारण तुम्हें किसी दूसरे मनुष्य या तुलना नहीं करना चाहिए। प्रेम और केवल प्रेम का ही मे उपदेश करता हूँ और मेरे उपदेश विश्वात्मा का सर्वव्याधित्व और उसका समरूप से अस्तित्व विषयक वेदान्त महान् सत्य है।

## निष्कर्ष

स्वामी विवेकानंद आधुनिक भारतीय चिंतन के प्रणेता व राष्ट्रीय आंदोलन के अग्रदूत थे। उन्होंने भारतीय धर्म व चिंतन धारा से भारतीय राष्ट्रवाद की नींव रखी। वे पहले भारतीय थे जिन्होंने पूरब और पश्चिम की संस्कृतियों में समन्वय का प्रयास किया। उन्होंने प्रत्यक्ष रूप् से राजनीति में भाग नहीं लिया, लेकिन अपनी रचनाओं व भाषणों के माध्यम से भारत विशेषकर बंगाल में राष्ट्रवाद की नैतिक नीव को मजबूत आधार दिया। स्वामी विवेकानंद ने धर्म में समाज सुधार और उसमें राष्ट्रवाद का आह्वान किया।

## संदर्भ सूची

1. पटाईत सत्यपाल, स्वामी विवेकानन्द, भारत – भारती (हिन्दी संस्करण) रुईक पथ नागपुर पृ. 12, 19, 23।
2. स्वामी विवेकानन्द, आत्मानुभूमि तथा उसके मार्ग, रामकृष्ण मठ (एकादश संस्करण ) पृ. 31।
3. स्वामी विवेकानन्द, सुक्तियां एवं सभाषित (सप्तम संस्करण) रामकृष्ण मठ, नागपुर, पृ. 1, 2, 4, 5, 13।
4. विवेकानन्द साहित्य दशम खंड, जन्मशती संस्करण, 1963, पृ. 13।
5. विवेकानन्द साहित्य, दशम खंड, जन्मशती संस्करण, 1963, पृ. 101, 102, 106, 159, 486
6. स्वामी विवेकानन्द, जाति, संस्कृति और समाजवाद, (सम्पत संस्करण), रमाकृष्ण मठ, नागपुर पृ. 1, 58, 59,

7. ज्ञान योग, भक्ति योग, कर्मयोग, और राजयोग इन चारों पुस्तकों के प्रकाशन, रामकृष्ण मठ, नागपुर।
8. पाण्डेय, रामशकल : विश्व के श्रेष्ठ शिक्षा शास्त्री, विनोद पुस्तक मन्दिर आगरा।
9. वर्मा.वी.पी. : आधुनिक भारतीय राजनीतिक चिंतन, लक्ष्मीनारायण अग्रवाल, आगरा, 1971।
10. गौतम घोषः ए बायोग्राफी ऑफ स्वामी विवेकानंद, रूपा, दिल्ली, 2003।
11. वरिंदर ग्रोवर : स्वामी विवेकानंद ए बायोग्राफी ऑफ हिज एंड आईडियाज, दीप एण्ड दीप, नई दिल्ली, 1998।
12. विवेकानन्द साहित्य : भाग–प्रथम से दशम, अद्वैत आश्रम, कोलकाता, 2014।
13. विवेकानन्द, स्वामी : विवेकानन्द साहित्य संकायल, रामकृष्ण मठ, नागपुर, 2017।
14. समाचार पत्र व शोध पत्रिकाएँ – यंग इण्डिया, विवेकानन्द केन्द्र पत्रिका, मद्रास शोध पत्र।
15. Pandey, R.S., *Preface to Indian Philosophy of Education,* S.K. Publishers, Dhiraj Place Gandhi Chowk, Aligarh.

********